

इयसि 13, 1, 39. तृतीयस्यामितो द्वि 5, 4, 3 (vgl. KĀND. UP. 8, 5, 3). VS. 2, 8. इतो यताममुत आयताम् CAT. Br. 6, 4, 13. 11, 1, 21. KĀTJ. ÇR. 3, 1, 18. 12, 2, 8. 18. इतो वज्र R. 3, 1, 30. 29. 8, 18. 27, 15. 1, 30, 15. 48, 20. 2, 66, 11. 68, 8. 84, 2. N. 12, 90. 14, 4. 20. ÇĀK. 30, 4. 55, 21. 136. VID. 108. 165. von hier an (in einem Buche) AK. 3, 4, 82. = इत् ऊर्ध्वम् P. 1, 4, 1, Sch. इतो निषीद् KUMĀRAS. 3, 2. R. 2, 74, 20. KATHĀS. 10, 51. VID. 71. von hier, aus dieser Welt; hier, hienieden: यत्ति ब्रह्मविद्: स्वर्गं लोकमित ऊर्ध्वं विमुक्ता: CAT. Br. 14, 7, 2, 11. 6, 24, 1 (= BRH. ĀR. UP. 4, 4, 8. 2, 1). 8, 7, 2, 13. 3, 8, 2, 22. KĀTJ. ÇR. 3, 8, 12. KĀND. UP. 5, 3, 2. AIT. UP. 4, 4. N. 2, 12. R. 3, 9, 23. BHAG. 14, 1. hierher: इत् एहि R. 5, 13, 9. 1, 9, 4. ÇĀK. 3, 7. 8. 23. 80, 3. 100, 22. KATHĀS. 26, 171. PRAB. 3, 3. 13, 9. इतो पत्रिकां दर्शय zeig' her ÇĀK. 90, 16. इत् इतः hierher, hierher 52, 5. 63, 1. इत्स् — इत्स् hier — dort: इत्स्त्वपिस्विकार्यम् इतो गुरुनाना 29, 20. इत्श्चेतश्च von hier und dort CAT. Br. 7, 5, 2, 46. 12, 2, 4, 7. hierhin und dorthin: परिधावन् N. 10, 18. 11, 13. 18. R. 3, 39, 20. 5, 12, 46. PĀNĀT. II, 162. = इत्श्चेतश्च R. 2, 105, 13. इत्स्ततः von hier und von da: चन्दनागुरुकाष्ठानि समाज-कुरितस्ततः 6, 96, 2. ये चैनमभिवर्तते यचितार इत्स्ततः 1, 31, 17. hier und dort 3, 61, 16. HIT. 20, 13. 22, 2. hierhin und dorthin, hin und her DRAUP. 8, 25. N. 10, 4. 13, 40. अत इत् dass. SĀH. D. 37, 5. — 3) von der Zeit: von jetzt an, jetzt: सचस्व नायमवसे अमीकै इतो वा तमिन्द्र पाहि रियः RV. 6, 24, 10. अपादित उडु नश्चित्तमो महो भर्षद्दमतीमिन्द्रहृतिम् 38, 1. येत आसीद्मिः पूर्वा AV. 11, 8, 7. नन्वेइतदितः पुरा ब्रह्म देवा अमी विडुः 13, 2, 13. इतो उपरम् künftighin 18, 2, 51. इतः पूर्वम् früher CAT. Br. 14, 9, 1, 11 (= BRH. ĀR. UP. 6, 2, 8). इत्श्चतुर्दशे वर्षे MBH. 3, 204. इतः सप्तमे दिने KATHĀS. 16, 63. इतः परम् von nun an PĀNĀT. 175, 25. इतः प्रभृति 221, 17. VID. 218. — 4) vom Grunde: deshalb: सर्वे परिगता देशा यज्ञिनं न लभे पशुम् । दानुमर्हसि मूल्येन सुतमेकमितो मम ॥ VIÇV. 11, 14. सामादीनामितः कर्तुं भवेद्युक्तं प्रवर्तनम् R. 5, 81, 45. — H. 7, 149. 150: इतो यतश्च विभागवत् ॥ पञ्चम्यर्थे नियमे च; eben so VIÇVA im ÇKDR. Im MANU kommt इत्स् kein einziges Mal vor, sehr häufig dafür अतस्.

इत्सु (इत् + अमु) adj. dessen Lebensgeister entflohen sind: उत् य-दीतासुर्ध्वति जीवत्येव, TS. 2, 1, 4, 4.

1. इति (von 2. इ) adv. euphonische Regeln in Betreff eines vorangehenden Vocals P. 1, 1, 16 — 18. 6, 1, 129. VOP. 2, 21. 22. auf diese Weise, so; ein Wort, das zu den am allerhäufigsten gebrauchten gehört. 1) in der ursprünglichen kräftigeren Bedeutung auf etwas Gesprochenes oder Gedachtes hinweisend: इति वा इति मे मनो गामश्चं सनुयामिति ja so! so ist mein Sinn: Rind und Ross soll ich geben! RV. 10, 119, 1. नाहं तं वेद् य इति ब्रवीति 27, 3. यत्र देवा इति ब्रवन् wohin die Götter sagen 9, 39, 1. वि पृच्छति मातरम् । क उयाः के हं अपिरे er fragte seine Mutter (so): wie, wie heissen die Gewaltigen? 8, 66, 1. देवसो देवमरिति न्येरि इति क्रत्वा न्येरि 4, 1, 1, 138, 3. दृशन्त्यो शयवे पिप्ययुगामिति च्यवा-ना सुमतिं भुरणू 6, 62, 7. am Anfange eines Verses oder Satzes mit Zurückweisung auf das Vorangehende: इति त्वा देवा इमं ब्रुहुः 10, 95, 18. 97, 1. 115, 9. 120, 4. इति स्तुतासो असया 8, 30, 2. 5, 7, 10. 41, 17. ऋक्सामैर्ह्याशासत इति नो ऽस्त्वित्यं नो ऽस्त्विति CAT. Br. 9, 4, 2, 12. 13, 1, 5, 6. 4, 2, 8. 2, 5. — सर्पाणां तु वचः श्रुत्वा सर्वयामिति चेति च MBH. 1, 1622. स कीति वाक्येन हरिप्रवरः प्रीतो ऽभवत् R. 4, 6, 24. इत्या प्रसादादस्यास्व

परिचर्यापो भव RAGH. 1, 91. 3, 69. das Vorangehende schlechtweg hervorhebend und in der Uebersetzung nur durch eine verstärkte Betonung wiederzugeben: त्रिधेतेश्चिति कृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते M. 2, 237. श्रुतीर्यर्थाङ्गिरीसीः कुर्यादित्यविचारयन् 11, 33. यस्तु मे ऽभिमतः कामस्त्वतः प्राप्त इतीप्सितः R. 1, 21, 3. भवाङ्गपतितं तोयं पवित्रमिति पस्पृशुः 44, 28. — 2) in den BRĀHMAṆA häufig hinweisend auf einen bestimmten Gebrauch, Gebärde, Zustand u. s. w., welche bei dem Zuhörer oder Leser als bekannt vorausgesetzt oder durch eine Gebärde näher bemerklich gemacht werden: so, nämlich: wie du weisst, wie du siehst: स वा इत्यथैतत्ततः संमार्ष्टीति मूलैर्वाह्यत इति वा अयं प्राण इति विदानः प्राणोदानावेवैतद्दधाति तस्मादतिवेमानि लोमानोतिवेमानि er streicht so (vorwärts) mit den obren Enden (des Büschels) im Innern (des Gefasses), so (rückwärts) mit den Wurzelenden (des Büschels) auf der Aussenseite: so (herwärts) ist der Athemzug, so (hinwärts) ist der Aushauch u. s. w. CAT. Br. 1, 3, 1, 7. ततो ऽर्धाः पिषत्यर्धा इत्येव धाना अघिष्टा भवन्ति die Hälfte davon zerquetscht man, die Hälfte bleibt so (wie sie ist) ungemahlene Körner 2, 6, 1, 5. इत्यग्रे कृषत्येति अग्रेत्येति so zieht er zuerst eine Furche, dann so, dann so u. s. w. 7, 2, 2, 12. तस्मादित्येव तिर्य-कप्रजिहीत 1, 7, 4, 12. 3, 3, 17. सर्वोपथं पालानीति संभृत् alle Kräuter, Früchte so (wie das ist, sein soll d. h. Alles was dazu gehört) zusammentragend 14, 9, 2, 1 (= BRH. ĀR. UP. 6, 3, 1). 2, 4, 2, 18. 6, 7, 2, 1. 9. 8, 1, 2, 8. 9. 9, 4, 2, 4. 2, 6. 8. इत्युन्मृश्य so (mit dem Arm) zu erreichen 1, 4, 1, 22. इत्याल्लिखितं 10, 2, 1, 8. 10. इत्येकं an dem und dem Tage 3, 3, 4, 17. 19. 9, 5, 1, 8. — 3) bei Anführungen aller Art, um das Gesprochene, Gedachte, Gewusste, Beabsichtigte als Jmdes verba ipsissima, die er wirklich gesprochen oder unter den gegebenen Verhältnissen hat sprechen können, kenntlich zu machen. Gewöhnlich steht इति am Ende der angeführten Worte, zuweilen aber auch vor denselben und sogar mitten drin. हनैमिना इति त्वष्टा यद्वावीत् RV. 1, 161, 5. 8. य ईमाहुः सुभि-र्निकृरिति 162, 12. 2, 12, 5. 4, 25, 4. 5, 27, 4. 61, 8. 9, 63, 9. 10, 17, 1. इत्यो ह वै तमिन्द्र इत्याचतते CAT. Br. 6, 1, 1, 2. जनको जनक इति वै जना धा-वन्ति 14, 5, 1, 1 (= BRH. ĀR. UP. 2, 1, 1). न मेरा इति मन्यसे RV. 8, 82, 5. 10, 146, 4. AV. 5, 18, 7. 8, 10, 1. कोऽस्य ब्राह्म समभरद्दीयं कर्वादिति 10, 2, 5. VS. 21, 61. 23, 24. CAT. Br. 13, 8, 2, 11. 4, 11. इन्द्रो ऽक्विभेदीदृङ् राट् विपर्यावर्तयतीति TS. 2, 5, 1, 1. न वैचाम मा सुनिति सोमम् RV. 2, 30, 7. इमान्यश्वानिति ष्टकि 5, 53, 3. तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः NIR. 7, 5. चि-दित्येषो ऽनेककर्मा 1, 4. अमरिति प्रज्ञानाम 10, 34. स गृणानो अदिर्द्ववा-निति RV. 10, 61, 26. द्वाविति क्षुषी इति 1, 191, 1. तीर्थस्तरिति प्रवर्तो म-कीरिति in Furten setzen sie «über die grossen Ströme» AV. 18, 4, 6, wo इति mit Beziehung auf die Stelle RV. 10, 14, 1 (= AV. 18, 1, 49, wo aber इति irrig steht) zu verstehen ist. प्राण इति कस्मिन् प्राणः प्र-तिष्ठितः CAT. Br. 14, 6, 2, 28 (= BRH. ĀR. UP. 3, 9, 26). Nach Wörtern, die einen Klang nachahmen (vgl. P. 5, 4, 57. 6, 1, 98. VOP. 7, 87): वकिष्टे अस्तु वाडिति heraus soll es aus dir, patsch! AV. 4, 3, 1. तद्दृङ्गिति प-पात CAT. Br. 14, 1, 1, 10. VS. 23, 22. — उदिते ऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा । सर्वया वर्तते यज्ञ इतीयं वैदिकी श्रुतिः ॥ M. 2, 15. 7, 97. श्रेयस्त्रिवर्ग इति स्थितिः 2, 221. 3, 120. u. s. w. मरुच्च इति (so sprechend) तु द्वारि क्षिपेत् 3, 88. उदित्या 8, 106. एतद्वा ऽभिकृतं सर्वं विधानं पाञ्चयज्ञिकम् ।